वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

हिंदी कथा साहित्य में नैतिक मूल्य

डॉ. आशीष कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष - हिन्दी विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

सारांश

मानवीय समाज की स्थापना से ही मानवीय नैतिक मूल्यों पर विचार किया जाता रहा है। क्योंकि ये मूल्य ही समाज को संगठित एवं निर्देशित करते रहे है। मानव के बिना इन मूल्यों का कोई अस्तित्व नहीं है। साहित्य मानव मन के उदात्त भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। इस तरह साहित्य का प्रत्यक्ष संबंध मानवीय मूल्यों से है। साहित्यकार अपनी सृजन कला से व्यवहारिक धरातल पर जीवन और जीवन मूल्यों की व्याख्या करता है। हिन्दी साहित्य के अनेक लेखकों ने सामाजिक तालमेल के लिए पारस्परिक आदान-प्रदान, समानता, न्याय, परिश्रम, मितव्ययता, सहयोग व एकता इत्यादि जीवन मूल्यों को अपने कथा साहित्य में चित्रण किया है। साहित्यकार की सामाजिक चिन्ता उसके साहित्य में मुखरित होती है, जो उसे सामाजिक दायित्व बोध के प्रति जागरूकता प्रदान करती है।

बीज शब्द

जीवन-मूल्य, परिप्रेक्ष्य, पुरुषार्थ, अंतरआत्मा, प्राण प्रतिष्ठा

प्रस्तावना

साहित्य में निहित जीवन-मूल्यों से समाज को व्यापक रूप से प्रेरणा मिलती है, इसमें कोई संदेह नहीं है। साहित्य ही वह भावभूमि है, जिससे मनुष्य अपने जीवन में उचित मूल्यों को स्थापित करके अपना जीवन सार्थक बनाता है। वैसे देखा जाए तो मनुष्य अपने जीवन में अपने अनुभवों द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है । संसार में रहते हुए उच्च जीवन निर्वाहन के लिए आदर्श जीवन-मूल्यों की स्थापना करता है। किन्तु साहित्य, मनुष्य के जीवन में सुलभ आदर्श मूल्यों को स्थापित करने में अधिक कारगर सिद्ध हुआ है। भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही जीवन

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

मूल्यों को महत्व दिया गया है। भारतीय विद्वानों ने मूल्यों की विवेचना मुख्यतः धर्म के संदर्भ में की है। जिन गुणों को धर्मानुकुल पाया गया है, उन्हें ही जीवन मूल्यों के अनुकूल बताया गया है। मानव के अनुसार धर्म के प्रमुख दस लक्षण है धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध ये धर्म के दस लक्षण हैं और यही मानवीय गुण मनुष्यों को श्रेष्ठ मनुष्य बनाते हैं। यही मानवीय गुण मनुष्य के नैतिक जीवनमूल्य हैं। भर्तृहरि ने भी अपने नीतिशतकम में मानवीय गुणों को ही नैतिक मूल्य स्वीकार किया है। उनके अनुसार जिन व्यक्तियों में विद्या, तप, दान, शील, गुण, धर्म आदि नहीं होते वे धरती पर बोझ होते हैं, तथा पशु की तरह आचरण करते हैं।

"येशां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं शीलं गुणों न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः
मनुष्य रूपेण मृगश्चराचरन्ति।।"[1]

भारतीय साहित्य में उस ज्ञान और उस जीवन को महत्व नहीं दिया गया, जिससे धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए पुरुषार्थ स्वयं जीवन मूल्यों के रूप में लक्षित होते है। मोक्ष को जीवन का चरम पुरुषार्थ बताया गया है। अर्थ और काम उस लक्ष्य तक पहुँचने के साधन है। पुरुषार्थ से जो जीवन-मूल्य उभरते है उन्हें दो वर्गों में बांटा जा सकता है - एक साधनात्मक और दूसरा साध्य। धर्म, अर्थ और काम साधनात्मक जीवन-मूल्य है जिनसे मोक्ष नामक पुरुषार्थ तक पहुँचा जाता है। मोक्ष ही जीवन का साध्य है और उसी की प्राप्ति के लिए मनुष्य कर्म करने को विवश होते है। पुरुषार्थ जीवन में प्राप्त चारों जीवन-मूल्य, मनुष्य के लिए आवश्यक जीवन-मूल्य है। इनके अभाव में मनुष्य अपने जीवन को सार्थक नहीं बना सकता समय के अनुसार मूल्य चिंतन में परिवर्तन होता रहा है और आगे होता रहेगा। मानवीय समाज की स्थापना से ही मानवीय नैतिक मूल्यों पर विचार किया जाता रहा है, क्योंकि ये मूल्य ही समाज को संगठित एवं निर्देशित करते रहे हैं। मानव के बिना इन मूल्यों का कोई अस्तित्व नहीं है। साहित्य मानव के उदात्त भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। इस आधार पर साहित्य का

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

प्रत्यक्ष संबंध मानवीय नैतिक मूल्यों से है। मूल्यों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हैं। मूल्य सामाजिक जीवन का एक आवश्यक अंग हैं। अर्थात् सामाजिक संरचना मूल्यों पर निर्भर होती हैं। मूल्यों से समाज में सुरक्षा, शांति एवं प्रगति होती हैं और अव्यवस्था रुक जाती हैं। अतः मूल्यों के अभाव में समाज व्यवस्थित नहीं चल सकता। मूल्यों के द्वारा मानवीय क्रिया-कलापों, सामाजिक अन्त: क्रियाओं तथा व्यवहारों को नियंत्रित किया जाता हैं। अर्थात ये मूल्य मानदंड होते हैं। इन मूल्यों से व्यक्ति समाज में सम्मान पाता हैं जिससे उसे यश व कीर्ति प्राप्त होती है। रामधारी सिंह दिनकर जी का कहना है कि- "मूल्य वे मान्याताएँ हैं, जिनके मार्गदर्शक रूपी ज्योति में सभ्यता चलती रही हैं।"[2]

मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करके सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता स्थापित करते हैं। मूल्य मानवता की कसौटी हैं। जीवन को दिशा देकर उसके योग्य-अयोग्य पर विचार व्यक्त करने के लिये मूल्य अत्यंत आवश्यक हैं। आज का युग विज्ञान का युग हैं। सभी क्षेत्रों में वैज्ञानिकता और तार्किकता ने प्रवेश कर लिया हैं। फिर भी समाज में मूल्यों का महत्व अनिर्वचनीय हैं। भारतीय संस्कृति की अधारशिला मानव मूल्यों पर ही टिकी हुई हैं। मूल्य समाज के सदस्यों की आंतरिक भावना पर आधारित होते हैं। वर्तमान में तीव्र गति से आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित होता युग मूल्यों को भी प्रभावित कर रहा हैं। मूल्य काल परिस्थिति सापेक्ष होते हैं। भौतिक जीवन में सफलता प्राप्त करने हेतु पारंपरिक मूल्यों की उपेक्षा की जाती है। मूल्यों के पतन से अनेक नई समस्याओं ने जन्म लिया हैं। मूल्यों के साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध हैं। साहित्य जीवन की सही और सार्थक अभिव्यक्ति हैं। शाश्वत मूल्य सत्यं शिवं, सुंदरम तीनों की सामंजस्य पूर्ण प्रतिष्ठा से ही साहित्य की संतुलता निर्भर रहती हैं। साहित्यकार अपनी सृजन कला से व्यावहारिक धरातल पर जीवन और जीवन मूल्यों की व्याख्या करता हैं। साहित्य की कोई भी विधा हो समकालीन समाज से अछूती नहीं रह सकती । साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। इसलिए साहित्यक कृति समय के मूल्यों की सामाजिक दस्तावेज होने के कारण ख्याति अर्जित करती हैं। सामाजिक जिंदगी से रचनाकार इतना ताल-मेल बैठा लेता हैं कि उसे यही आभास होता है कि ये सभी कष्ट स्वयं उसके हैं। जितनी ही उसकी चेतना उसे अंदर से झकझोरती हैं, उसी अनुपात में रचना भी जीवन से जुड़ती हैं। अपने युग और समाज से रचनाकार प्रभावित ही नहीं होता बल्कि सामान्य जनता की तरह एक साक्षी

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

होता हैं। क्योंकि उसका अनुभव व्यक्तिगत नही होता। इसलिये समाज की हर परिस्थिति उसके लिए उसकी साहित्यक कृति का विषय बन जाता हैं।

कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी आधुनिक साहित्य की सबसे लोकप्रिय और सशक्त विधा रही हैं क्योंकि इसमें सभी मानवीय मूल्यों की सृजनात्मक शक्ति को व्यक्त करने की क्षमता दिखाई देती हैं। हिन्दी कथा साहित्य में समाज और व्यक्ति की आन्तरिक अनुभूतियों की गूंज सुनाई देती हैं। स्वतंत्रता के बाद देश की राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में अनेक परिवर्तन हुए। सांप्रदायिकता के कारण ही वर्तमान युग में स्वीकृत मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। प्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल का उपन्यास 'दिव्या' सामाजिक मूल्यों को अंकित करता है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र रुद्रधीर जातिगत संस्कारों से निगमित वर्णव्यवस्था के पक्ष में है। द्विज कन्या होकर भी दिव्या का नारीत्व का चरम भाव मातृत्व अबाधित रखने दासत्व स्वीकारना, अपने शिशु के लिए वेश्या बनना उसके नारीत्व को चुनौती देता है। हीन कुल में जन्में पृथु सेन का अपने गण की स्वतंत्रता हेतु युद्ध भूमि में वीरता दिखाना राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। यवनराज मिलिंद का दासों को बंधनमुक्त कर उन्हें स्वतंत्रता तथा उनके भरण-पोषण हेतु यथेष्ट द्रव्य देना मानवता का प्रतीक है। हिंसा और युद्ध के विपरीत विश्वशांति का संदेश देने वाला 'अमिताष' उपन्यास भी विशिष्ट हैं। 'किसी से छीनो मत, किसी को डराओ मत किसी को मारो मत वाक्य समानता, सद्भाव, मानवता जैसे मूल्यों को दर्शाता है।"[3]

मोहनदास नैमिषराय का उपन्यास 'वीरांगना झलकारी बाई' दलितों में व्याप्त राष्ट्रप्रेम, वीरता, सर्वस्व त्याग जैसे मूल्यों पर आधारित है। रांगेय राघव के उपन्यासों में भी मूल्यों का विशेष स्थान है। 'देवकी का बेटा' उपन्यास में कृष्ण का चरित्र मानव के रूप में चित्रित किया गया है, जो राजतंत्र या एकतंत्र के स्थान पर गणतंत्र को प्रधानता देता है। यह उपन्यास शांति, करुणा जैसे मूल्यों पर आधारित है। 'यशोधरा जीत गयी बात' 'लोई का ताना' 'आंधी की नींवें' नारी सम्मान को मूल्य के रूप में स्वीकार कर प्रचलित समाज में भी नारी की विजय की गाथा को प्रस्तुत करते है। ऐतिहासिक उपन्यास तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों को अस्वीकार कर स्थापित मूल्यों को नकारने का ढाढस दिखाते है।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

अपने कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों को व्यक्ति संवेदनाओं को हिन्दी साहित्य के कथा सम्राट प्रेमचन्द ने बखूबी ढंग से दर्शाया है। वे समाज में किसी भी प्रकार की क्रांति के नहीं बल्कि सामाजिक सुधार के समर्थक थे। उनके साहित्य सृजन में यह ज़रूर देखने योग्य है कि वे धीरे-धीरे आदर्शवाद प्रभाव से मुक्त होते हुए यथार्थवाद की ओर उन्मुख हो गए । 'गोदान', उपन्यास और 'पूस की रात' एवं 'सादगी' कहानी में यह बात स्पष्ट दिखाई देती है। बदली हुई परिस्थितियों में वे ख़ुद को बदल रहे थे। यदि प्रेमचन्द युग का आरम्भ 'सेवासदन' उपन्यास में दिखाई देता है तो उसका उत्कर्ष 'गोदान' उपन्यास में साफ़ साफ़ झलकता है। गोदान उपन्यास में उन्होंने भारतीय किसान की पतनशील स्थिति के लिए शोषकों के साथ-साथ सामाजिक रूढियों, अंधविश्वासों और दुराग्रहों को जिम्मेदार माना है। उन्होंने बदलते हुए यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में जीवन मूल्यों को समझने का प्रयत्न किया है। छोटे व ग़रीब किसान की मज़दूर बन जाने की विवशता को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है जो इस उपन्यास की महान उपलब्धि है। 'गोदान' उपन्यास को कृषक जीवन की त्रासदी का महाकाव्य माना गया है। भाग्यवाद ने किसान को यथास्थितिवादी होने के लिए मज़बूर कर दिया है।

इस उपन्यास में प्रेमचंद आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। यह एक तरह से आदर्श और यथार्थ का मिलाजुला रूप है। प्रेमचंद ने प्रगतिवादी साहित्य को नयी दिशा दी जिसे आलोचकों ने - 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' कहा है। वे आदर्शों और विचारधाराओं को अपने पात्रों पर थोपते नहीं हैं, बल्कि अन्तर्मन या अन्तरात्मा की आवाज की तरह स्वाभाविक रूप से प्रस्फुटित होने देते हैं। किसी देवता की कामना करना मुमकिन है लेकिन उसमें प्राण-प्रतिष्ठा करना मुश्किल है। यथार्थ और आदर्श के समन्वय से उन्होंने अपने पात्रों में सच्ची प्राण-प्रतिष्ठा की। मानवीय दुर्बलता उनके पात्रों में मिलती है। लेकिन ऐसी दुर्बलताएं ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। अन्यथा निर्दोष चरित्र तो देवताओं में ही मिल सकता है। साहित्य में 'होरी', 'धनिया' और 'गोबर' जैसे 'सर्वहारा' जैसे पात्रों को स्थान दिलाने का श्रेय भी प्रेमचंद को ही है। हिन्दी साहित्य का यह प्रकाश स्तंभ है जो जीवन मूल्यों को बताता था । आज हमारे बीच नहीं है पर यह तो निश्चित है कि वे देश के महान व सर्वोत्तम रत्न थे। उन्होंने जनवादी लेखनी को नित नवीन आयाम दिये जीवन को कसौटी पर कसने के लिए उन्होंने एक मापदंड दिया। वे लेखनी के माध्यम से भविष्य का मार्ग दर्शन भी करते थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का गंभीर प्रयास किया। हिंदी साहित्य में उनके योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। उनके दिखाए जीवन का मूल्य और उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक हैं।

कृष्णा सोबती के 'डार से बिछुडी', 'मित्रो मरजानी, 'सूरजमुखी अंधेरे के', उपन्यासों में यौन-काम वासना के अधिकतर चित्रण, पुरातन मूल्यों को नकारती हुई औरते दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा जी ने 'रुकोगी नहीं राधिका' में प्यार, और प्यार न मिलने के कारण राधिका को मिलने वाले तनाव का सूक्ष्म ढंग से चित्रण किया है । शशिप्रभा शास्त्री के 'वीरान रास्ते और झरना', नावें, 'सीढियाँ, आदि उपन्यासों में नारी मन की कठोर वेदना, दुःख और संवेदनाओं के अतिरिक्त समाज में अवैध संबन्धों ने किस तरह नैतिक मूल्यों का ह्रास किया है इसका भी सजीव चित्रण मिलता है। मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'महाभोज', 'स्वामी' आदि उपन्यासों मे प्रेम, राजनैतिक परिवेश, अलगाव, विश्वास,अंधविश्वास और धोखा जैसे सामाजिक मूल्यों को व्यक्त किया है। मालती जोशी जी के 'ज्वालामुखी के संदर्भ में', 'पाषाण युग', 'निष्कासन', 'सहमें हुए प्रश्न' आदि उपन्यासों में जीवन मूल्यों के बदलने से किस तरह समाज के व्यक्तियों में एकाकीपन हावी हो गया है और आधुनिकता का परिवेश और उसके दुष्परिणामों को भी कठोर कथानाक के आधार पर दिखाया गया है।

व्यक्तिगत प्रतिष्ठागत मूल्यों की अभिव्यंजना प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार जैनेन्द्र के उपन्यासों में भी सर्वत्र विद्यमान है। अपने पात्रों की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के चरम मूल्यों की स्थापना का मूल केन्द्र 'अहं' को स्वीकार करते हुए उन्होंने समाज, परिवार तथा संस्कृति के विविध आयामों से व्यक्ति की विद्रोही चेतना का आकलन पात्रों के माध्यम से किया है। इस विद्रोही चेतना में ही प्राय: उन्होंने परम्परागत मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों की स्थापना को चित्रित किया गया है। वैयक्तिक धरातल पर स्त्री-पुरुष के दो भिन्न क्षेत्रों का विवेचन जैनेन्द्र के उपन्यासों में उपलब्ध होता है, जिसमें नारी चरित्र को अधिक विशिष्टता के साथ उद्घाटित किया गया है। जैनेन्द्र के नारी पात्र उद्दाम वैयक्तिकता के स्तर पर नैतिक विद्रोह से सृजित हैं। वे रूढिग्रस्त परम्पराओं के विरुद्ध हैं। आर्थिक स्वतन्त्रता के दृष्टिकोण से मूल्य निर्धारण की स्थिति का चित्रण 'कल्याणी' उपन्यास में और राजनीति का व्यक्ति के सीधे सम्पर्क की परिणति का चित्रण 'सुखदा' उपन्यास में किया गया है। यह आधुनिक युगीन चिन्तन की देन है, जो जैनेन्द्र

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

के उपन्यासों में मूल्यों के अपसरण और अनुसरण के अन्तर्विरोधी तत्वों के अनुसन्धान की क्रान्तिकारी प्रतिक्रिया के रूप में परिलक्षित होता है। 'जयवर्धन' और 'मुक्तिबोध' उपन्यासों में जैनेन्द्र ने व्यक्ति मूल्यों की स्थापना का क्षेत्र नैतिकतावादी मूल्य से जोड़ा है, जिसमें शरीर समर्पण के नव मूल्यों का विस्फोट हैं। अध्यात्मवादी मूल्य की आत्म-स्वीकृति के भय से कम्पित जैनेन्द्र के कथा साहित्य में पुरुष स्त्री पात्र दिखाई देते है। छायावाद के प्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की कहानियां 'आकाशदीप', 'ममता', 'पुकार' में भी रिश्तों की उलझनों को दिखाया गया है।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी में विशुद्ध प्रेम और श्रध्दा भाव दर्शाया गया है। प्रेमचंद जी तो हमेशा से ही मूल्यों के आग्रही दिखाई देते है। उनकी 'परीक्षा', 'नमक का दरोगा', पंच परमेश्वर', में आदर्श का ही चित्रण है। विश्ववंभर नाथ शर्मा की 'ताई' कहानी में भी पारिवारिक मूल्यों को दिखाया गया है। यशपाल जी की 'महादान' कहानी में मूल्यों का विघटन किस प्रकार हो रहा है उसे दर्शाया गया है। 'दुख का अधिकार' इस कहानी में सामाजिक, आर्थिक विषमता को दिखाया गया है। अज्ञेय जी की कहानियों में भी दांपत्य संबंधों में छेद दिखाया है। मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' में परिस्थिति के अनुरूप मूल्यों में हो रही गिरावट देख सकते है। कमलेश्वर जी के 'मांस का दरिया', 'कस्बे का आदमी', 'बयान' आदि कहानियों में मानवीय मूल्यों के गिरते हुए स्तर का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

इसी तरह अमरकांत ने अपने उपन्यास 'इन्हीं हथियारों' के माध्यम से भी सामाजिक जीवन में आयी गिरावट को बड़ी ही गहराई के साथ पात्रों के माध्यम से लेखक ने चरित्र का उत्कर्ष दिखाया है तो दूसरी तरफ भोलाराम जैसे लोग भी हैं जो पैसों के लिए सब कुछ करने की हिम्मत रखते हैं। उपन्यास की पात्र ढेला पेशे से वेश्या है पर उसकी भी कोई पसंद या नापसंद हो या संभव नहीं है। उसके यहाँ जो भी ग्राहक के रूप में आ जाये उसे उसकी सेवा करनी ही है। अगर कभी वह मना करती तो माँ उसे ऐसा कहने से मना करती है। माँ के ऊपर चिढ़कर वह अपनी माँ से कहती है कि, "तुम हो पक्की लालची। तुम्हें कायदा,अच्छा-बुरा, सेहत-तन्दुरूस्ती, किसी का कुछ भी ख्याल नहीं। तुम किसी को आराम करते देख नहीं सकती। एक ढेबुला के लिए तुम किसी की भी जान ले सकती हो। इसी लालच की वजह से अच्छा खाना-पीना भी नहीं मयस्सर हो रहा है।"[4]

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

ढेला की मनोदशा उसके इस संवाद से समझा जा सकता है। मगर माँ श्यामदासी जीवन की गहरी समझ रखती है। उसे मालूम है कि वैचारिक मूल्यों से कहीं अधिक आवश्यकता एक वेश्या को अपने शरीर की बाजारू 'कीमत' से है । वह मूल्यों' और कीमत' के इस फर्क को समझती है। इसीलिए वह कहती है कि- "यहाँ रंडी के पेशे में कोई फायदा थोड़े ही है, दो जून की रोटी दाल चल जाती है, यही बहुत समझो।"[5] गँवार, छोटे दिलवालों के इस शहर में गाने-बजाने का खयाल भूलकर भी दिल में न लाना, नहीं तो भूखों मरोगी ही, हम सभी की हालत वैसी ही हो जाएगी। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में मानव मूल्यों का महत्त्व निर्विवाद है। इन मूल्यों के निर्माण में भारतीय मनीषियों, चिन्तकों, विचारकों और साहित्यकारों ने भी अहम् भूमिका निभायी है, लेकिन ये मूल्य स्थायी नहीं होते । भौतिकता की प्रचण्ड आंधी के कारण इनमें तीव्रगत्या परिवर्तन होते रहते हैं। आज के बौद्धिक वातावरण में प्राचीनता के प्रति विद्रोह और नवीनता का आग्रह बढ़ता जा रहा है। परम्परागत रूढ़ियों के विरुद्ध नयी चेतना ने जन्म लिया है। स्वतन्त्रता के पाँच दशक पश्चात् तो जैसे मानव मूल्यों में एक संक्रान्ति उत्पन्न हो गयी है, जिसने जीवन को नये ढंग से विश्लेषित करने की प्रक्रिया को उभारा है। परिवेशगत परिस्थितियों में इतना जबरदस्त बदलाव आया है कि मानव मूल्यों सम्बन्धी नये दर्शन को समाज के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। मानव मूल्यों के कतिपय नये विकल्प प्रकाश में लाये जा रहे हैं।

मानव मूल्य संस्कृति के विरोधी नहीं होते अपितु धीरे-धीरे वे संस्कृति का अंग बन जाते हैं। ये गतिशील होते हैं और संस्कृति की जड़ता को भी दूर करते हैं। मानव को सार्थक बनाने में इन मूल्यों का बहुत योगदान रहता है लेकिन जैसे-जैसे समाज में उतार-चढ़ाव आता है। परिस्थितियाँ परिवर्तित होती हैं और परिवेशगत दबाव बढ़ते हैं, उसी के अनुसार मानव मूल्यों में भी परिवर्तन की प्रक्रिया घटित होती रहती है। इसी प्रकार से मानव मूल्य भी विषय के अनुसार वर्गीकृत हो जाते हैं जैसे - वैयक्तिक मानव- मूल्य, पारिवारिक मानव मूल्य, सामाजिक मानव मूल्य, राजनीतिक मानव मूल्य, आर्थिक मानव मूल्य आदि।

हिन्दी साहित्य में अनेक ऐसे लेखक हुए है जिन्होनें सामाजिक तालमेल के लिए पारस्परिक आदान-प्रदान, समानता, न्याय, परिश्रम, मितव्यतता, सहयोग व एकता इत्यादि आस्था सहित जीवन जीने जैसे भी उपयोगी जीवन मूल्य है का चित्रण किया है। साहित्य और

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

समाज में गहरा संबंध है। समाज से कटकर रचना धर्मिता महत्त्वहीन हो जाती है। प्रत्येक रचना कतिपय सामाजिक मूल्यों को आत्मसात् किए रहती है वास्तव में साहित्यकार की सामाजिक चिंता उसके साहित्य में मुखरित होती है, जो उसे सामाजिक दायित्व बोध के प्रति जागरूकता प्रदान करती है। इसी से वह सामाजिक रूढ़ियों, आत्मविश्वासों और कृत्रिम नैतिकता का विरोध करते हुए समाज हित में नई जीवन दृष्टि का प्रतिपादन करता है। इन साहित्यकारो ने सामाजिक वैषम्य और भेदभाव का विरोध किया है और सामाजिक अन्याय, अनाचार, स्वार्थपरता, अस्पृश्यता के साथ-साथ व्यक्ति स्वातंत्रय व पारिवारिक मूल्यों को उजागर करने का सफल प्रयत्न किया हैं।

साहित्यकार के कथा-साहित्य में मानव मूल्य वस्तुतः मूल्य विवेक सम्मत् वैचारिक दृष्टिकोण हैं। मूल्यों का मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है, भले ही विभिन्न क्षेत्रों में इनका स्वरूप अलग-अलग है मूल्यों का महत्त्व व्यक्तिगत, सार्वजनिक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न रूपों में है। ये मानव समाज में एकता स्थापित करने का कार्य करते हैं। नए मूल्यों को भी सहजता से नहीं अपनाया जा रहा है, इस टकराहट की स्थिति का लेखा जोखा प्रस्तुत उपन्यासों द्वारा हुआ है । कुछ लेखकों ने इन मूल्यों को संवारने का प्रयास किया है या नहीं, नैतिक चरित्रों का निर्माण करने की मार्मिकता लेखकों ने दिखाई है या नहीं आदि का मार्मिक चित्रण वर्तमान कथा साहित्य में उपन्यास और कहानियों के माध्यम से किया जा रहा है। इक्कीसवी सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद की चकाचौंध में बदलती मनोवृत्ति का चित्रण उपन्यासों में हुआ है।

छायावादी कवियों के साहित्यक मूल्य यदि आगे चलकर मार्क्स, गाँधी अरविंद आदि के प्रभावस्वरूप बदल गए तो यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी कहा है कि-"तत्कालीन साहित्य वहाँ की जनता चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है।"[6] साहित्य समाज से ही प्रेरणा प्राप्त करता है। जो गुण मनुष्य को मनुष्यत्व प्रदान करते हैं उन्हीं गुणों को साहित्यकार अपने में सृजित करता है। एक अच्छे साहित्यकार का दायित्व है कि वह ऐसा साहित्य रचे जिससे जनता को प्रेरणा मिले। मनुष्य को साहित्य के द्वारा अपने जीवन में अच्छा आचरण आत्मसात् करने का दायित्व साहित्यकार पर निर्भर होता है। एक अच्छा साहित्यकार अपने साहित्य में उचित जीवन-मूल्यों को सृजित कर अपने दायित्व का उचित निर्वाह करता है।

वर्ष-1, अंक-3, अप्रैल - जून 2024 E-ISSN : 2584-2900

इस प्रकार साहित्य में निहित जीवन-मूल्यों को श्रेष्ठ बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। यह अलग बात है कि प्रत्येक मनुष्य की समझने की सामर्थ्य के अनुसार वह अपने जीवन में साहित्य में निहित जीवन-मूल्यों को किस रूप में ग्रहण करता है। इन साहित्यकारों ने सामाजिक अन्याय, अनाचार, स्वार्थपरता, अस्पृश्यता के साथ- साथ व्यक्ति स्वातंत्र्य व पारिवारिक मूल्यों को उजागर करने का सफल प्रयत्न किया है। साहित्यकार के कथा-साहित्य में मानव मूल्य वस्तुतः मूल्य विवेक सम्मत वैचारिक द्रष्टिकोण है। मूल्यों का मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है, भले ही विभिन्न क्षेत्रों में इनका स्वरूप अलग-अलग है मूल्यों का महत्व व्यक्तिगत, सार्वजनिक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न रूपों में है।

संदर्भ सूची

1. नीतिशतकम् / भर्तृहरि, श्लोक -13
2. साहित्य मुखी / रामधारी सिंह दिनकर, पृ.56
3. व्यक्ति और द्रष्टा / शम्भुनाथ सिंह, पृ.82
4. आधुनिक हिंदी साहित्य / डॉ॰ रामगोपाल सिंह चौहान, पृ.8.
5. मूल्यः साहित्य, संस्कृति और समाजः रत्ना लाहिड़ी, पृ.34
6. हिंदी उपन्यास का इतिहास/गोपाल राय, समकालीन भारतीय साहित्य, पृ.56

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR